The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 7 | July 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

किन्नर केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त समस्याएँ:आर्थिक परिप्रेक्ष्य

जगमोहन यादव
शोधार्थी, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
ईमेल- jagmohanyadav6388@gmail.com

प्रो0 पंकज सिंह
(शोधनिर्देशक एवं प्राचार्य), केन ग्रोअर्स नेहरू पी0जी0 कॉलेज, गोला (लखीमपुर)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.16810209

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-07-2025

Published: 10-08-2025

Keywords:

किन्नर, चिकित्सा, बहिष्कृत, उपेक्षित, पीड़ित, समावेशीकरण,

ABSTRACT

'अर्थ' से तात्पर्य साधारणतया धन अथवा भौतिक संसाधनों से लिया जाता है। सामाजिक प्राणी की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अर्थ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन है। धन का मुख्य कार्य समाज की भौतिक आवश्यकताओं की आपूर्ति करना है। इस कार्य के सम्पन्न होने के लिये उत्पादन, वितरण और उपयोग की क्रियाएँ सम्मिलित हैं। सभ्यता के विकास के साथ-साथ इन क्रियाओं ने बड़ा ही जटिल रूप धारण कर लिया है। आर्थिक स्तर का किसी भी व्यक्ति, परिवार या समाज पर सीधा असर पड़ता है। कमजोर आर्थिक स्थिति वाले व्यक्ति, परिवार या समाज के सामने कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं इसके साथ ही सामाजिक बुराइयाँ भी पनपने लगती हैं उदाहरण के तौर पर चोरी, कालाबाजारी, देह व्यापार आदि। समाज में सम्मानपूर्वक जीवन जीने के लिए व्यक्ति की न्यूनतम आर्थिक स्थिति इतनी होनी चाहिए कि वह न केवल सही से पेट भर सके बल्कि चिन्तामुक्त जीवन जी सके। अपने परिवार का भरण-पोषण कर सके। सामान्यतः समाज के अलग-अलग वर्गों में अलग-अलग आर्थिक स्थिति के लोग दिखाई देते हैं जैसे डॉक्टर समाज, इंजीनियर समाज, शिक्षक समाज, अधिकारी समाज आदि-आदि। इसी प्रकार मध्यम और निम्न मध्यमवर्गीय समाज में आर्थिक विचलन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

प्रस्तावना

किन्नर समाज को भी आर्थिक समस्याओं से जूझना पड़ता है। सामान्यतः माना जाता है कि किन्नरों के डेरे में बहुत पैसा होता है तथा किन्नरों के गुरु बहुत पैसे वाले होते हैं लेकिन अकेले किन्नर या फिर जिसने डेरे की शरण नहीं ली है, ऐसे किन्नर को कई प्रकार के आर्थिक कष्ट झेलने पड़ते हैं। इसका कारण यह है कि यह समाज सदियों से मुख्य धारा से अलग रहा है। एक सभ्य समाज के लिए यह कलंक ही है कि किन्नर समाज को इस समाज का अंग ही नहीं माना जाता है। वह अपनी पैतृक संपत्ति से, शिक्षा से, रोजगार से, चिकित्सा से, अपनी पहचान से हमेशा बहिष्कृत रहा है। घनश्याम कुशवाह लिखते हैं, "जहाँ देश के तथा उसके नागरिकों के विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई जाती हों और सभी वर्गों के समावेशीकरण की बात की जा रही हो वहाँ पर ट्रांसजेण्डर को इन सुविधाओं और विकास से आखिर वंचित क्यों रखा गया? इस प्रश्न का जवाब इस समाज से मिलना चाहिए।"[1]

नीरजा माधव के उपन्यास में किन्नर जीवन में आर्थिक समस्या के प्रसंग कई स्थलों पर अभिव्यक्त हुए हैं। नारी उद्धारगृह की वार्डेन रीता देवी से जब मंत्री जी जन्माष्टमी पर रासलीला करवाने की बात करते हैं तो रीता देवी उनके सामने खर्चे के लिए धन की आवश्यकता की बात कहती हैं, "रासलीला के लिए उतने संगतकार, ड्रेस, वगैरह का खर्च...वैसे भी मंत्रीजी, एक निवेदन लेकर आयी थी। हिम्मत तो नहीं पड़ रही है, फिर भी कह रही हूँ। कुछ विधायक निधि से मदद कर दीजिए तो अपने उद्धारगृह की दूसरी मंजिल भी बनवा लूँ। सोचती हूँ, ऑफिस वगैरह नीचे रहता और रहने की व्यवस्था ऊपर तो ठीक रहता।"[2]

एक अन्य प्रसंग में जब नंदरानी के दसवीं के फार्म को प्राइवेट तौर पर भरने की बात उसके पिता कहते हैं तो वह नहीं मानती और कहती है कि प्राइवेट पढ़ने से उसके डॉक्टर बनने का स्वप्न अधूरा रह जाएगा। इस पर उसकी माँ उसे परिवार की आर्थिक समस्या के बारे में बताते हुए कहती हैं, "बेटी देखो, पापा की आमदनी कम है। फौज में ऐसा कोई धंधा तो है नहीं कि ऊपर की आमदनी हो। भइया भी अभी पढ़ रहा है। नंदिनी की शादी कर देना चाह रहे हैं तेरे पापा, ताकि तुझे और भइया को निश्चिंत होकर पढ़ा सकें। नंदिनी के बाद तुम ही दोनों रहोगे न मेरे पास? फिर मैं सारी जिम्मेदारी उठा लूँगी।"[3]

सच्चाई तो यह है कि इस संसार में जीने के लिए आर्थिक आधार होना अति आवश्यक है क्योंकि दैनिक जीवन की जरूरतें बिना अर्थ के पूरी नहीं हो सकतीं।यमदीप उपन्यास में इस बात को बहुत साधारण शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है जब सोना के एक बालसुलभ प्रश्न का उत्तर देते हुए छैलू कहता है, "घर में खाने का सामान कैसे आएगा?तुम्हार दूध, फ्रॉक, ये बैग, टिफिन, सब कैसे आएगा? पैसा रहेगा तब न? मम्मी पैसे के लिए काम करती है।"

[4]सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि किन्नरों की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी होती है। इसीलिए बेरोजगार युवक नकली किन्नर बनकर तालियाँ पीटते हुए दिखाई दे जाते हैं। किन्नर कथा में महेन्द्र भीष्म ने लिखा है, "असल में आर्थिक

जरूरतें पूरी करने के लिए यदि मर्दों का एक तबका सरेआम तालियाँ पीट रहा है तो इसकी वजह किन्नरों के बाजार की आर्थिक हैसियत भी है। इसी कमाई को लेकर इधर कुछ वर्षों से असली किन्नरों और उनकी तरह जीने वाले मर्दों अर्थात् नकली किन्नरों के बीच तकरार बढ़ रही है।"[5]

किन्नरों को तब तक आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता है जब तक वे किसी डेरे में शामिल नहीं होते। डेरे में शामिल होने के बाद प्रायः खाने-पीने और पहनने की कमी तो नहीं होती। हाँ, उन्हें धनोपार्जन के लिए किन्नरों के पारंपरिक कार्य जैसे नाचना-गाना, बधाई माँगना, सड़कों पर तालियाँ बजा-बजाकर पैसे माँगना आदि करने होते हैं। किन्नर कथा उपन्यास में एक प्रसंग में महेन्द्र भीष्म ने रहमान नामक एक स्त्रैण स्वभाव वाले पुरुष के संवाद में लिखा है, "जी हुजूर मैं रहमान हूँ, गाँव में स्वांग मंडली के साथ नाचने-गाने का काम करता हूँ, दो रोज पहले अब्दुल भाई मुझे छतरपुर लेकर आए थे। मेरे बाप ने गरीबी से तंग आकर खुदकुशी कर कर ली थी हुजूर! तीन छोटी बहने हैं, बूढ़ी माँ है हुजूर, गाँव में काम मांगने पर कोई काम नहीं देता। स्वांग वाला, खुसआ, जनखा, हिजड़ा कहकर टरका दिया जाता है। ताने मारते और हँसते-छेड़ते हैं मुझे। छह दिन से घर में चूल्हा नहीं जला। हुजूर! भूखों मरने की नौबत आ गई है। माँग-मूँग कर दूसरों की दया पर जी रहे हैं हुजूर! भला हो अब्दुल भाई का। इन्होंने लंबू हिजड़े से मिलवा दिया। दो दिन में तीन सौ कमा लिए हुजूर!"[6]

दूसरी ओर कुछ किन्नर ऐसे भी हैं जिन्हें इस तरह बधाई माँगना, गाना-नाचना पसंद नहीं आता लेकिन इसके अतिरिक्त उनके पास आजीविका का कोई साधन नहीं है और जीवन की आवश्यकताएँ तथा डेरा प्रमुख या गुरु के आदेश का पालन करने के लिए उन्हें मजबूरी में यह सब करना पड़ता है। 'मैं पायल' उपन्यास में पायल जब डेरे में शामिल हो गयी तो उनके अनुसार उसे भी गाने-बजाने तथा बधाई माँगने टोली के साथ भेजा गया लेकिन उसका मन उस कार्य में नहीं लग रहा था। महेन्द्र भीष्मपायल का वक्तव्य लिखते हैं, "मुझे बधाई टोली के साथ जाना रास नहीं आ रहा था, पर मन मसोसकर जाना पड़ता था। बधाई, गाने-बजाने के समय अक्सर मिलने वाली दुत्कार, परिहास मुझे व्यथित कर देती थी।"[7]

डेरे में शामिल किन्नरों को डेरे का खर्चा चलाने के लिए इस प्रकार के कार्य करने होते हैं। वे अपने द्वारा कमाया गया धन डेरे प्रमुख को दे देते हैं जिसके बदले में उन्हें खाना-पीना, रहना, वस्त्र एवं असामाजिक तत्वों से सुरक्षा प्रदान का जाती है। मैं पायल में महेन्द्र भीष्म लिखते हैं, "बधाई टोली से जो रुपया-पैसा-जेवर मिलता वह गुरूमाई के सुपुर्द कर दिया जाता। गुरुमाई उसी में से कुछ इनाम स्वरूप हम लोगों को बाँट देती और एक बड़ा हिस्सा अपने पास रख लेती। बदल में रहना, खाना और बाहरी अराजक तत्वों से सुरक्षा प्रदान करती।"[8] गरीबी, बेरोजगारी और भुखमरी के दबाव में कई मर्द हिजड़ा बनने को मजबूर हो जाते हैं। इन्हीं सारी मजबूरियों के चलते तीसरी ताली उपन्यास का एक पात्र ज्योति हिजड़ा बनना चाहता है। प्रदीप सौरभ लिखते हैं, "ज्योति हिजड़ा बनने पर आमादा था...उसे अपना भविष्य हिजड़ा समाज में ही दिख रहा था। उसके तर्कों का तरकश भरा हुआ था। एक-के-

बाद-एक तर्क देकर वह सोनम को समझाने की कोशिश कर रहा था, 'माना मैं मर्द हूँ, लेकिन ये समाज मुझसे मर्द का काम लेने के लिए राजी नहीं है। मुझे इस समाज ने मादा की तरह भोग की चीज में तब्दील कर दिया है। मैं मर्द रहूँ, औरत रहूँ या फिर हिजड़ा बन जाऊँ, इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा, पेट की आग तो बड़े-बड़ों को न जाने क्या-क्या बना देती है।'"[9] आर्थिक संकटों से जूझता हुआ ज्योति अन्ततः हिजड़ा बनने के लिए दिल्ली में नीलम की मण्डली में चला जाता है, "मण्डली में नया सदस्य जुड़ने की खबर से उत्साहित नीलम फटाफट कमरे से बाहर आयी। उसने उससे सोनम का हालचाल पूछा। फिर उसे दिलासा देते हुए बोली, 'तू अब घबरा मत। अब तू नीलम की शरण में है। अच्छे पैसे कमा लेगा दिल्ली में। माँ-बाप को भी भेज सकेगा।'"[10] किन्नरों द्वारा नाचने-गाने और बधाई माँगने में सदैव उन्हें मुँह माँगा इनाम मिल जाए ऐसा आवश्यक नहीं। कभी-कभी तो इनाम भी नहीं मिलता और गाली-गलौच, मारपीट भी हो जाती है। चित्रामुद्गल के उपन्यास पोस्ट बॉक्स 203 नाला सोपारा से एक उदाहरण द्रष्टव्य है, "दस-बारह रोज पहले की घटना सिहरा देती है। कहीं नाचने-गाने गये थे सभी। न्यौछावर ज्यादा मांगने पर उन लोगों ने मुँहमाँगा देने से मना कर दिया। चन्द्रा ने इठलाते हुए घर के बूढ़े मालिक के गले की सोने की जंजीर पर हाथ क्या रख दिया कि वे लोग ठिठोली को जबरई मान बैठे। ये लोग भी उतर आये नंगई पर। जमकर मारा-पीटी हुई। घर की बहू ने पुलिस को फोन कर दिया। पुलिस के लिए सही वही है जो पर्दे वाले घरों में रहते हैं। उनके घर को बेपर्द करने की जुर्रत कैसे कर सकता है? सरदार समेत सात लोग लॉकअप में डाल दिए गये।"[11]

'दरमियाना' में सुभाष अखिल ने अलग-अलग पाँच किन्नरों की कथा को अलग-अलग अध्यायों में बाँटकर लिखा है। सामान्यतः सभी आलोच्य उपन्यासों में किन्नरों के गाने-बजाने, बधाई माँगने का यथोचित वर्णन मिलता है। 'दरमियाना' में सुभाष अखिल ने एक किन्नर के माध्यम से इस बात की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है कि आज के समय में शहरों में एक या दो ही बच्चे पैदा करने के कारण सबसे अधिक आर्थिक समस्या का सामना किन्नरों को ही करना पड़ रहा है। इससे अच्छा तो गाँव में बधाई माँगने जाया जाये क्योंकि वहाँ चार-पाँच बच्चे तो होते ही हैं। वे लिखते हैं, "रेशमा ने उसी तरह दोनों हाथों की हथेलियों के मध्य-भाग को टकराया और लचकते हुए कहने लगी, 'न री बहना! ये तो शुकर करो कि मैंने जम्फर-साड़ी नहीं माँगी और फिर क्या हम रोज़-रोज़ माँगने आती हैं?...वैसे भी इन शहर के मर्दों में कौन-सा ज़ोर रह गया है, देहातों में होयें तो हम दस-पन्द्रह आस-औलादों का हक पाती हैं...सो बहना! इक्यावन तो मैं लेके रहूँगी।'रेशमा ने तीन-चार बार ताली पीटी और इक्यावन के मिलने का इन्तजार करने लगी।"[12]

यदि देखा जाए तो सामाजिक अस्वीकृति के बाद आर्थिक समस्या किन्नर व्यक्ति की मुख्य समस्या है। हालांकि किन्नर डेरों के विषय में यह बात सत्य नहीं है क्योंकि किन्नर डेरे में आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत सम्पन्नता दिखती है। वे लोग नाच-गाकर, बधाई माँगकर एवं अन्य प्रकार से धनोपार्जन करते हैं लेकिन समाज में अकेले रह रहे किन्नर व्यक्ति के लिए आर्थिक आधार प्राप्त करना तब और कठिन हो जाता है जब उसकी लैंगिक सच्चाई

सबको पता चल जाती है। उन्हें न केवल अपने परिवार से अलग होना पड़ता है बल्कि अर्थोपार्जन के लिए भी अनैतिक कार्यों में लिप्त होने को मजबूर होना पड़ता है।

निष्कर्ष

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में हिन्दी साहित्य में निहित विभिन्न विमर्शों में से किन्नर या थर्ड जेण्डर विमर्श ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा। इसका मुख्य उद्देश्य किन्नरों की समस्याओं की ओर मुख्य धारा के समाज का ध्यान आकृष्ट करने के साथ-साथ उन समस्याओं के निवारण का मार्ग भी खोजना था। यूँ तो किन्नर जीवन स्वयं में ही एक त्रासदी है लेकिन किन्नर का जन्म लेने के बाद किन्नर व्यक्ति को कदम-कदम पर संकटों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, अस्मिता संघर्ष आदि के साथ-साथ आर्थिक संघर्ष भी इसमें निहित है। सामान्यतः किन्नर व्यक्ति का अर्थोपार्जन गाने-बजाने और बधाई माँगना ही समझा जाता रहा है लेकिन बहुत सारे किन्नरक ऐसे भी हैं जो अपने इस परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर अन्य कार्य भी करना चाहते हैं जैसे नौकरी, व्यवसाय, पढ़-लिखकर सम्मान पूर्ण जीवन जीना चाहते हैं किन्तु सामाजिक स्वीकृति न होने के कारण तथा पूर्वाग्रह ग्रसित होने के कारण ये समाज गाने-बजाने, बसों-रेलों या चौराहों पर माँगने तथा देह व्यापार करने पर मजबूर है। ऐसा न होने पर इन्हें घोर आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता है। किन्नर केन्द्रित प्रायः सभी हिन्दी उपन्यासों में इस समस्या को विस्तार से अभिव्यक्ति मिली है। आर्थिक संकटों से जूझता एक किन्नर किन-किन समस्याओं और परिस्थितियों का सामना करता है इन उपन्यासों में बहुत मार्मिकता से वर्णित हुआ है।

संदर्भ

1. घनश्याम कुशवाहा, ट्रांसजेण्डर समुदाय : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, साहित्य और समाज में उभरता किन्नर विमर्श, संपादक डॉ. भारती अग्रवाल, नालंदा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण2019, पृ. 16
2. नीरजा माधव, यमदीप, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2021, पृ. 37
3. वही, पृ. 62
4. वही, पृ. 67
5. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2018, पृ. 107
6. वही, पृ. 123
7. महेन्द्र भीष्म, मैं पायल..., अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2016, पृ. 100
8. वही, पृ. 99
9. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011, पृ. 57

10. वही, पृ. 61

11. चित्रामुद्गल, पोस्ट बॉक्स 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2020, पृ. 51

12. सुभाष अखिल, दरमियाना, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2018, पृ. 14